उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर भारत बदलाव का भारत था। 90 के दशक से भूमंडलीकरण के आगमन से स्त्री का जीवन किस प्रकार से प्रभावित हुआ है और उसके बाद 21 वीं सदी के प्रारम्भिक दौर में स्त्री का जीवन परंपरावादी समाज से किस तरह से भिन्न है, इसका यथार्थ 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में दिखाई देता है। नारी जीवन के शोषण को केंद्र बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में स्त्री अपने समय की चुनौतियों को स्वीकार करती हुई दिखाई देती है।

मधु काँकरिया का हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान है। उनका कृतित्व बहुआयामी है। समृद्ध व्यक्तित्व और स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। मधु काँकरिया स्त्रियों के प्रति एक आदर्श हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, यात्रा वृतांत, अनुवाद आदि विधाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके साथ-साथ व्यवसाय में भी उन्होंने सफलता हासिल की है।

उनका परिवार रूढ़िवादी और पितृसत्तात्मक समाज में विश्वास रखने वाला था। इनके परिवार में रूढ़िवादी परंपरा और पितृसत्तात्मक परम्पराओं को मानने वाले लोग थे। मधु काँकरिया अपने रूढ़िवादी परिवार में रहते हुए आधुनिकता की दहलीज पर पाँव रखते हुए खोखली परम्पराओं का विरोध किया। अपने विद्रोही तेवर के चलते ही वे पितृसत्तात्मक समाज में अपनी जगह बना पाई हैं। हर मोड़ पर रूढ़िवादी परम्पराओं से टकराना आज भी उनके स्वभाव में है । उन्होंने सामंती पितृसत्तात्मक समाज और धर्म में नारी की मुक्ति को वैचारिक आधार दिया है। उनका लेखन सिद्धांत से विस्तृत ना होकर जीवन की व्यावहारिकता से उद्धत है।

मधु काँकरिया का स्वभाव मिलनसार और सीधा-सादा व्यवहार वाला है। इसके साथ-साथ वह निर्भीक और साहसी भी हैं। अन्याय के विरुद्ध उन्होंने निर्भीकता पूर्वक आवाज उठायी है, बिना किसी लाग लपेट के यथार्थ को सामने रख देना उनके उपन्यास में साफ- साफ दिखाई देता है।'सेज पर संस्कृत'उपन्यास में संघमित्रा आधुनिक भावबोध से युक्त स्त्री पात्र है, जो अपने परिवेश,

अंधविश्वास, पाखण्ड और अंध प्रथाओं के खिलाफ लड़ती है । मधु काँकरिया के रचना कर्म के आधार पर उनके अनुभव संसार की विविधता दिखाई देती है। मधु काँकरिया के उपन्यास आज की नारी का सहज मानवीय रूप में चित्रण करते हैं तथा नारी के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप में दृढ़तापूर्वक स्वीकार करते हैं और इसके साथ-साथ इनके उपन्यास जीवन की वास्तविकता और समस्याओं से जुड़े हुए हैं । उपन्यास के माध्यम से वे नारी जीवन की संभावनाओ को दिखाती हैं । इनके कथा साहित्य में भारतीय नारी की संघर्ष गाथा का सच्चा आईना तो है ही इसके साथ-साथ स्वातंत्र्योत्तर युगीन कथा साहित्य में नारी के मानसिक जीवन और बौद्धिक दृष्टिकोण को अधिक प्रश्रय दिया गया है।

मधु काँकरिया ने अपने विषय का चयन स्वतंत्र रहकर नैतिकता-अनैतिकता के प्रश्नों को तिरष्कृत करके अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों का प्रतिपादन किया है । इनके उपन्यास में स्त्री-पुरुष के यौन- संबंधी पारिवारिक पृष्ठभूमि को केंद्र में रखकर लिखे गए हैं। इसके साथ-साथ लेखिका ने स्त्री-पुरुष शोषक प्रणय प्रसंग, कामवासना, विवाह समस्याएँ, समान अधिकारों की पक्षधरता, यौन संबंधों की उन्मुक्तता, परिवर्तित मूल्य दृष्टि, उन चरित्रों का विकास तथा अधूरा प्रेम आदि सब तरीकों से लेखिका ने जाँच-पड़ताल करके उन पर खुलकर लिखने का प्रयास है।

मधु काँकरिया के उपन्यास भारतीय नारी की अस्मिता संघर्ष की जीवन गाथा है इसके साथ ही उनके उपन्यास में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश की झलक भी पायी जाती है।

समाज या राष्ट्र के उदय में स्त्री-पुरुष दोनों का समान महत्व होता है । एक के बिना दूसरे का कार्य संभव नहीं होता है। यदि पुरुष घर के बाहर के कार्यों को उन्नत एवं सुचारु रूप से करता है तो स्त्री सेवा एवं स्नेह के साथ घर के विभिन्न कार्यों का निर्वाह करती है। स्त्री के बिना पुरुष अधूरा है। दोनों के बीच जीवन की धारा तभी प्रवाहित होती है। जब दोनों में सामंजस्य होता है।

नारी समाज का एक अभिन्न अंग है, स्त्री के बिना समाज की कल्पना ही नहीं जा सकती है। स्त्री सदा अपना कार्य कर्तव्य निष्ठा के साथ पूरा करती है, परंतु उसको अपना अधिकार कभी नहीं मिल पाता है। नारी चाहे पुत्री, पत्नी, माता आदि किसी भी रूप में हो उसके साथ सही व्यवहार व बर्ताब मुश्किल से किया जाता है। समाज का पूरा ढाँचा स्त्री को दबाता है। समाज आज तक स्त्री को उसका अधिकार नहीं दे पाया है।

वर्तमान समय में भारतीय नारी की स्थिति में कुछ हद तक सुधार हुआ है। वह अभी भी अशिक्षित पर्दा-प्रथा से घिरी, दहेज से प्रताड़ित तथा निरीह दिखाई पड़ती है। गाँवों में इनकी स्थिति और भी दयनीय है, वह पुरुष के पैरों की जूती समझी जाती है तथा उसे कठपुतली की तरह नचाया जाता है। इसका यथार्थ उपन्यास में साध्वी दिव्यप्रभा के माध्यम से कथाकार ने दिखाया है। भारतीय समाज में आज भी नारियों को शिक्षा से वंचित रखा गया है। क्योंकि वह रूढ़िवादी मानसिकता वाले परिवार से जुड़ी हुई हैं। वे चाहकर भी न तो शिक्षा ग्रहण कर पाती नही सामंती व्यवस्था को बदल पाती हैं क्योंकि आज भी भारतीय समाज में रूढ़िवादी परिवार वालों की यह धारणा है कि लड़की पढ़-लिख कर क्या करेगी, उनका मानना है कि शादी के बाद तो उसे चूल्हा-चौका ही करना होता है, इसका यथार्थ उपन्यास में दिखाई देता है छुटकी की बहन संघमित्रा उसे पढ़ना चाहती है लेकिन उसकी माँ उसे रोक देती है और कहती है कि पढ़ाई में कुछ नहीं रखा है पढ़ाई से बढ़कर धर्म है। क्योंकि वह परंपरावादी मानसिकता वाले पात्र का प्रतिनिधित्व करती है।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है यहाँ परंपरागत रूप से पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार व्यवस्था पायी जाती है। जिसमें परिवार के पुरुष सदस्यों को तो अनेक अधिकार प्राप्त हैं। किन्तु स्त्रियों को उनसे वंचित किया गया है। संयुक्त परिवार में स्त्रियों की बहुत दुर्दशा होती है। वह दासी की तरह जीवन व्यतीत करती है। उनका जीवन खाना बनाने, बच्चों को जन्म देने उनकी देख-रेख करने एवं परिवार के सदस्यों की सेवा में ही व्यतीत हो जाता है। स्त्रियों को मनोरंजन का साधन समझा

जाता है। नारी शोषण जैसे रूढ़िवादी परिवार संस्था में होती है उतनी शायद किसी और संस्था में नहीं होगी। रूढ़िवादी परिवार संस्था में नारी का शोषण दैहिक, भौतिक आदि कई रूपों में होता रहता है।

धर्म के बनाए हुये नियम भी विरोधाभास से भरे हुए हैं, एक तरफ तो वह स्त्री को देवी का रूप मानता है तो दूसरी तरफ वह स्त्री को इंसान भी नहीं मानता पर देवी बनाकर उसका शोषण जरूर करते हैं। धर्म ने ही स्त्री को पुरुष के अधीन कर दिया है और उसे पुरुष की एक रात की सेज़ की साथी बनाए रखा है और इसी के साथ-साथ दिन में उसी स्त्री को पुरुष की सहकर्मिणी, समान व्यक्तित्वशाली हर क्षेत्र में कदम-ताल मिला कर उसके साथ चलने पर भी लोगों को आपत्ति है। उन्होंने स्त्रियों को बेड़ियों में जकड़ रखा है। उसे घर व विवाह में बांध कर रखा है। उसकी श्रम शक्ति व जनशक्ति सबको पुरुष की गिरफ्त में डाल दिया गया है।

समय के साथ-साथ परम्पराओं में भी परिवर्तन होने चाहिए किन्तु समाज में एक बड़ा तबका ऐसा रहा है जो परम्पराओं के नाम पर समाज के अन्य लोगों का शोषण करते रहे हैं। स्त्री के संदर्भ में देखा जाए तो बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा, स्त्री शिक्षा का विरोध उन्हें घर तक सीमित रखना आदि अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियाँ इसी परंपरावादी व्यवस्था की देन है।

रूढ़िवादी मानसिकता से ग्रस्त पुरुषों ने स्त्रियों को मानसिक रूप से अपने अनुरूप तैयार किया है। उन्हें बचपन से ही समाज परिवार में परंपरागत व्यवस्थाओं और उसकी समाज में उपयोगिता के आधार पर शिक्षा दी जाती है। जन्म लेने के बाद से मृत्यु होने तक वह किसी की बेटी, बहन, माँ, व पत्नी के रूप में ही जानी जाती है। उसकी अपनी कोई पहचान नहीं है। पुरुष प्रधान नीतियों में बँधी हुई स्त्री केवल उपभोग का साधन बनकर रह गयी है।

लोकतान्त्रिक संवैधानिक प्रणाली में स्त्री को पुरुषों के समान अधिकार मिलें है लेकिन आज भी महिलाओं की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है क्योंकि स्त्रियों को जो संवैधानिक अधिकार

संविधान में दिये गए हैं वे केवल संविधान के पन्नों पर ही धरे रह गए हैं जैसे-जैसे स्त्री शिक्षित हो रही है वैसे-वैसे अपने ऊपर हो रहे अत्याचार, अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठा रही है।

स्त्री-शिक्षा ने स्त्री स्वर को नयी पहचान दी है। इस क्षेत्र में सत्यशोधक समाज सुधारकों ने भी विशेष प्रयास किए है। स्त्री शिक्षा के लिए पंडिता रमाबाई ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संस्कार परिवार में धर्म को आधार बनाकर ही दिये जाते हैं। अधिकतर संस्कार स्त्रियों के लिए ही होते हैं क्योंकि हर संस्कार का पालन स्त्री ही करती है। जैसे इस उपन्यास में नागपंचमी को लेकर जो संस्कार है वह धर्म के आधार पर ही है और स्त्री को इन नियमों का पालन करना ही होता है अगर उसने ऐसा नहीं किया तो वह पति सुख से वंचित रह जाएगी ऐसी मान्यता है। लेकिन हमारे समाज में धर्म ने पुरुषों के लिए इस तरह का कोई भी नियम या संस्कार नहीं बनाया है।

'सेज़ पर संस्कृत' उपन्यास में मधु काँकरिया ने यह दिखाया है कि परिवार में कैसे धर्म को आधार बनाकर स्त्री को संस्कारित किया जाता है। जैसे संघमित्रा की माँ अपनी दोनों बेटियों को संस्कारित करती है और फिर स्त्री को नियमों और संस्कारों की दुहाई देकर बंधनों में जकड़ दिया जाता है। 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में जैसे छुटकी को साध्वी दिव्यप्रभा की उपाधि देकर उसकी आड़ में छुटकी का इस प्रकार शोषण होता है कि धर्म की आड़ में उसके बचपन के साथ-साथ उसका पूरा जीवन ही समाप्त हो जाता है। इस उपन्यास में धर्म की आड़ में स्त्रियों के शोषण का बड़ा ही दर्दनाक चित्रण किया गया है कि किस तरह से आधुनिक चेतना से युक्त संघमित्रा के इतने विरोध के बावजूद भी धर्म के ठेकेदारों ने छुटकी को हसते खेलते परिवार से उठाकर उसे कोठे तक पहुँचा देते है, और समाज देखता रहता है यह समाज में धर्मगत कट्टरता का भयावत रूप है। जिसको मधु काँकरिया ने बड़े ही सहज ढंग से दिखाया है।

उपन्यास के माध्यम से यह बताया गया है कि कैसे धर्म संस्कार की आड़ में स्त्रियों का शोषण करता है। इन्ही संस्कारों और नियम के द्वारा उनका शोषण होता रहता है। ऐसा इसलिए होता है

क्योंकि धर्म संस्कार और परिवार आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं और इन्हीं को आधार बनाकर पितृसत्तात्मक समाज स्त्री का शोषण करता है। इसके साथ-साथ मधु काँकरिया ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के रूढ़िगत संस्कार एक स्त्री से ही सारे नियम वचन और संस्कार निभाने को बाध्य करते हैं।

मधु काँकरिया ने इस उपन्यास में सुसंस्कृत और सभ्य समाज का कड़वा सच सामने रखा है, और यह दिखाया है कि धर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदार जो मुखोटा लगाकर बैठे हैं उनके अंदर की हकीकत क्या है धर्म के नाम पर अपना अर्पण कर साध्वियों, मुनियों का जीवन जीने वाला व्यक्ति भी अंत में सेज पर आ जाता है। सेज की लालसा में वह बलात्कार जैसे कुकर्म करने लगता है। अधूरी काम इच्छाओं के कारण यह सुसंस्कृत व्यक्ति अपनी यौन पिपासा बुझाने की कोशिश में अपने संस्कार, अपनी गरिमा तक भूल जाता है।